

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

संरक्षक

प्रो. जनक दुलारी आही
कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. भवतोष इन्द्रगुरु
प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. ए.एन. शर्मा
- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी
- प्रो. अशोक अहिरवार
- प्रो. दिवाकर राजपूत
- प्रो. डी.के. नेमा
- प्रो. नागेश दुबे
- डॉ. अनुपमा कौशिक
- डॉ. प्रकाश जोशी

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अंक-80, जनवरी-जून 2021

ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है तथा यहाँ प्रकाशित आलेखों की 'प्लेजिरिज्म' (Plagiarism) सम्बन्धी शुचिता की जिम्मेदारी लेखकों की है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :

मध्य भारती

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर - 470003 (म.प्र.)

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहेर

मुद्रण :

अमन प्रकाशन

कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

सदस्यता शुल्क	आजीवन	प्रति अंक
	रु. 2000/-	रु. 150/-
व्यक्तिगत	रु. 4000/-	रु. 200/-
संस्थागत		

अनुक्रमणिका

साहित्य में व्यक्ति और समाज का रूपांतरण राजेन्द्र यादव	7
भोजपुरी लोक में वैकल्पिक इतिहासबोध की वाचिक परम्परा राघवेन्द्र प्रताप सिंह	16
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास-बोध विवेकानन्द उपाध्याय	24
छत्तीसगढ़ की प्राचीन कला संस्कृति मोहन लाल चढ़ार	31
शिक्षा, बच्चे एवं मानसिक स्वास्थ्य : एक सामयिक सन्दर्भ संजय शर्मा एवं विवेक जायसवाल	36
भारत में जनहित याचिकाओं की प्रांसगिकता और उपलब्धियां राघवेन्द्र प्रताप सिंह	42
मानवाधिकारों के संरक्षण एवं संवर्धन में नागर समाज की भूमिका मिथिलेश कुमार	49
भारत के ग्रामीण विकास में ग्रामीण पर्यटन का योगदान राजबहादुर अनुरागी	56
बालरामायण में सामाजिक सद्भाव रामहेत गौतम	65
हजारीप्रसाद द्विवेदी का व्याकरणिक-चिन्तन चन्दन तिवारी	73
सिलसिला ए चिश्ती और हिन्दुस्तानी मौसिकी आकाश जैन	81

गोवा मुक्ति आन्दोलन में सागर की सहोदरा राय की भूमिका <i>बी.के. श्रीवास्तव</i>	93
रामविलास शर्मा की इतिहास दृष्टि <i>आशुतोष</i>	101
Paris Climate Agreement, COVID-19 and India's Dilemma of Competing Priorities <i>Shri Prakash Singh & Akshay Kumar Singh</i>	107
E-Content : Teaching Through Web <i>Harel Thomas</i>	121
Internal Marketing to Ethical Internal Marketing <i>Astha Dewan</i>	131
Women in Gandhi's Swaraj with Special Reference to Raja Rao's Kanthapura <i>Nishtha Saxena</i>	137
Girish Karnad's Yayati : A Tale of an Old Man's Lechery and an Un-heroic Filial Sacrifice <i>R. T. Bedre</i>	146
Rama Mehta's Inside the Haveli : A Study in Relation to the Feminist Perspectives <i>Rashmi Singh</i>	151
A Neuro Scientific Perspective on Universal Harmony <i>Preeti Wadhwani</i>	158

Poststructuralist Method : A Study in Cross-Cultural Application <i>Vandana Rajoriya</i>	166
A Utopian Setting with Non-Utopian Characters : A Study of Parent-Child Relation in <i>Boy Meets Boy</i> by David Levithan <i>Neha Pillay and Shashank Gupta</i>	176
Exemptions and Limitations Under Patent Laws in India : An Analytical Study <i>Jagdish Wamanrao Khobragade</i>	181
History in Fiction : A Note on Rohinton Mistry's Representation of Post-Independence India <i>Devendra Rankawat</i>	189
The Unnoticed Rock Art of Simdega, Jharkhand : An Introductory Archaeological Study <i>Seema Mamta Minz, Mshkoor Ahmad Quadri, Baleshwar Besra</i>	197
Foundations of Aesthetics : Abhinavagupta and Hegel Reconsidered <i>Shraddha Singh</i>	204
Medicinal Plants of Jammu and Kashmir <i>Romasa Shukla</i>	211
A Descriptive Study of Ethnic Media & Indianness Among the Indian Diasporic Communities in Fiji <i>Anuj Kumar Singh</i>	224

Understanding the Life-style and Cultural Aspect of Sahariya Tribal Women : An overview (with special reference to Shivpuri district of M.P.) <i>Deepak Kumar Rajak</i>	231
Comparison of Thumbprint of Office Workers and Mines Workers with the help of Trasoscan Imaging System <i>Chhote Raja Patle and Devasish Bose</i>	237
<i>पुस्तक-समीक्षा</i> <i>चिन्मय भारत की जातीय अस्मिता और जयशंकर प्रसाद</i> <i>अम्बिकादत्त शर्मा</i>	245

साहित्य में व्यक्ति और समाज का रूपांतरण

राजेन्द्र यादव

“रचनाकार का कर्म अपनी भावनाओं में अपनी प्रेरणा में, अपने आंतरिक संस्कारों में समाज सत्य मर्म को ढालना उसमें अपने को पाना है और पाने को अपनी पूरी कलात्मक क्षमता से पूरी सच्चाई के साथ व्यक्त करना है।” - शमशेर बहादुर सिंह

पाश्चात्य आलोचक क्रोचे के अनुसार “व्यक्ति के मन में बाहरी संसार के प्रभाव स्वरूप उत्पन्न अनेक भाव चित्र रहते हैं, उसमें अनुभूति की तीव्रता के कुछ क्षण ऐसे आते हैं; जब व्यक्ति इन छायाचित्रों को अपने पर प्रकट करने के लिए विवश हो जाता है।” व्यक्ति की इसी विवशता में साहित्यिक सृजन का मूल प्रेरणा केन्द्र स्थित होता है। जिसके द्वारा रचना में व्यक्ति और व्यक्ति में समाज का रूपांतरण होता है। इस तरह जब व्यक्ति के चित्त में घूमने वाले छाया चित्रों को अपने पर प्रकट करता है तो मानो आवेगों और आंदोलनों को बस में कर लेता है।

गहन अनुभूति के क्षणों में हमारी आत्मा और मस्तिष्क में आनन्द की प्रसव वेदना अविभूत होती है, उसी का उच्छलन रचना होती है। साहित्य का मूल धर्म आत्माभिव्यक्ति है। आत्माभिव्यक्ति वह मूल तत्व है, जिसके कारण कोई व्यक्ति, साहित्यकार और उसकी रचना साहित्य बन पाती है। साहित्य का सम्बन्ध दार्शनिक अतिवादों से नहीं बल्कि मानव जीवन से है, उसके आसपास से है, उसके समाज से है। बाहरी दुनिया, समाज के कुछ प्रभाव घटनाएँ या दृश्य जो बहुत गहरे स्तर पर व्यक्ति मन को प्रभावित करते हैं और अनुभूति के चरम पर पहुँचकर अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं। यह रचनाकार के मनोहृदय में फिर पुनः प्रविष्ट होता है और अपने अनुभव को मस्तिष्क के साथ विचार स्थिति में रखकर अभिव्यक्त कर वह एक नये रूप में नये अर्थ में रचना में व्यक्ति तथा व्यक्ति में समाज को ध्वनित करता है।

आत्मा की अभिव्यक्ति का माध्यम एक नहीं अनेक हैं किन्तु आत्मा की जो अभिव्यक्ति शब्द और अर्थ द्वारा होती है उसे ‘साहित्य’ कहते हैं। आमतौर पर रचना में देखा जाए तो रचनाकार ही अधिक दृष्टव्य होता है किन्तु ऐसा नहीं कि उसमें समाज नहीं होता है। व्यक्ति अकेला कोई इकाई नहीं है और वह अकेला समाज भी नहीं है, तब रचना में व्यक्ति अकेला कैसे हो सकता है? उसके साथ उसका जीवन उसके अनुभव सुख-दुख आदि की अनुभूतियाँ भी संलग्न रहती हैं, जो एक व्यक्ति में ही उसका परिवार, गाँव और समाज बसाए होती हैं। यही जीवन का समाज रचनाकार के हृदय को गहरे अनुभूति के धरातल पर प्रभावित करता है, जिसके परिणामस्वरूप रचना होती है और उस रचनाकार की रचना में हमें रचनाकार से सम्बद्ध उसका समाज,